IJAER/January-February 2016/Volume -5/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

गांधीय चिंतन : आयाम एवं प्रासंगिकता

डॉ मंजुलता शर्मा

व्याख्याता-राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय निवाई टोंक राजस्थान

महात्मा गांधी आधुनिक भारत के इतिहास रूपी आकाश में चमकते हुए नक्षत्र है। उनके दुर्लभ व्यक्तित्व ने न केवल भारत के लोगों के लिए बल्कि पूरी मानवता के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य किया है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने सही टिप्पणी की है, "आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से विश्वास करेंगी कि मांस और खून में ऐसा कोई व्यक्ति इस धरती पर कभी चला था" । जबकि गांधी अपने लेखन और अभ्यास से पहले दक्षिण अफ्रीका और फिर भारत में मुक्ति संग्राम छेड़ने में व्यस्त थे, साथ ही वे एक ऐसे दर्शन या जीवन शैली को विकसित कर रहे थे जिसे निश्चित रूप से क्रांतिकारी कहा जा सकता है। गांधीवादी चिंतन की प्रकृति अध्यात्मवादी है। सत्य, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलने से मनुष्य को वास्तविक स्वतंत्रता मिलेगी जो उसका हक है और जिसके लिए वह अनजाने में लेकिन लगातार लालायित है, गांधीजी की ईश्वर में आस्था ग्रेनाइट की चट्टानों की तरह अडिग और अटूट है। गांधी के लिए सत्य, प्रेम और ईश्वर परिवर्तनीय शब्द हैं। उनका सरोकार पूरी मानवता के लिए था, पूरी सृष्टि के लिए था, क्योंकि जो प्रतीत होता है और मानवीय इंद्रियां जो महसूस करती हैं, वह ईश्वर की अभिव्यक्ति है। गांधी ने मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष को छुआ और सत्याग्रह के अपने अचूक हथियारों से, जो वास्तव में सत्य, प्रेम और अहिंसा का प्रतीक था, विरोधी को अपने पक्ष में बदलने की कोशिश की।

प्रमुख शब्द: *गांधीवादी, विचार, सत्याग्रह*

परिचय:

भारत ने ऐसे पुरुषों और महिलाओं को जन्म दिया है जिन्होंने जीवन के मंच को अद्भुत कार्यों और विचारों से अलंकृत किया है, जिन्होंने पीढ़ियों के माध्यम से लोगों की भावनाओं, सोच और कार्यों को प्रभावित किया है और इस प्रकार पूरे विचारों में क्रांति ला दी है। ऐसी ही एक शख्सियत हैं महात्मा गांधी, भारत में स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक। महात्मा गांधी ने जिस तरह से लोगों के दिलो-दिमाग पर राज किया और सत्याग्रह के रास्ते में मानवता को अभूतपूर्व और अडिग शक्तियों के हथियार दिए, महानों की पूरी आकाशगंगा उस चकाचौंध रोशनी में फीकी पड़ गई जिसे महात्मा ने मूर्त रूप दिया था। यू.एस. मोहन राव कहते हैं, "मानव जाति के इतिहास में महान संत, दार्शनिक, विचारक, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ और राजनीतिक नेता हुए हैं जिनका अपने-अपने क्षेत्रों में योगदान उत्कृष्ट रहा है। लेकिन गांधीजी अद्वितीय थे, क्योंकि जब वे अपने देश को विदेशी शासन से मुक्त करने के लिए एक जन संघर्ष का सक्रिय रूप से नेतृत्व कर रहे थे, तो उन्होंने व्यक्तिगत और राजनीतिक दृष्टि से स्वराज की कल्पना की और प्रतिबिंब और प्रयोग के माध्यम से जीवन के एक दर्शन को विकसित करने का प्रयास किया, जिसकी स्थायी वैधता होगी। गांधी जी जहां पहले दक्षिण अफ्रीका और फिर भारत में अपने लेखन और व्यवहार से मुक्ति संग्राम छेड़ने में व्यस्त थे, वहीं वे एक ऐसे दर्शन या जीवन पद्धति को विकसित कर रहे थे जिसे निश्चित रूप से क्रांतिकारी कहा जा सकता है। गांधीजी ने विनम्रता से कहा कि गांधीवाद जैसी कोई चीज नहीं है। अगर गांधीवाद से हमारा मतलब एक निश्चित हठधर्मिता या पंथ है जिसे निर्धारित सूत्रों में कहा जा सकता है, तो निश्चित रूप से ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे गांधीवाद कहा जा सके। लुई फिशर ने गांधी को "स्वतंत्र, अबाधित, अप्रत्याशित, इसलिए रोमांचक और कठिन" के रूप में वर्णित किया है। उनका जीवन निरंतर विकास की

विशेषता वाले सत्य की खोज के लिए समर्पित निरंतर अनुभव और सतत प्रयोग की गाथा थी। गांधीवादी विचारों में से कई मौलिक एकता और निरंतरता से चिह्नित हैं।

गांधीवादी विचार की प्रकृति

गांधीवाद की शुरुआत 'सादा जीवन उच्च विचार' की प्रसिद्ध पंक्ति से होती है।

गांधीवादी चिंतन की प्रकृति ही अध्यात्मवादी है। जीवन के सांसारिक मामलों पर उनके सभी कथनों, लेखनों, मध्यस्थताओं और कार्यों के अलावा सत्य, प्रेम और अहिंसा में उनके अटूट विश्वास का एक रेशमी धागा है। अध्यात्मवादी पक्ष मानव प्रकृति का स्थायी पक्ष है, क्योंकि मनुष्य उस शांति को पुनः प्राप्त करने के लिए, उस स्वर्ग के राज्य को पाने के लिए जो उसके अस्तित्व का एक अनिवार्य हिस्सा है, निरंतर संघर्ष और प्रयास कर रहा है। सत्य, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलने से मनुष्य को वास्तविक स्वतंत्रता मिलेगी जो उसका हक है और जिसके लिए वह अनजाने में लेकिन लगातार लालायित है, ईश्वर में गांधी की आस्था ग्रेनाइट की चट्टानों की तरह अडिग और अटूट है। गांधी के लिए सत्य, प्रेम और ईश्वर परिवर्तनीय शब्द हैं। उनकी चिंता पूरी मानवता के लिए थी, पूरी सृष्टि के लिए थी, क्योंकि जो प्रतीत होता है और मानव इंद्रियां जो अनुभव करती हैं, वह ईश्वर की अभिव्यक्ति है। प्रत्येक सत्व उस अग्नि स्तंभ की चिंगारी मात्र है। गांधी ने अपने विभिन्न अभियानों में आश्चर्यजनक सफलता हासिल करने का मुख्य कारण यह था कि उन्होंने स्थायी पक्ष, यानी मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष को छुआ और सत्याग्रह के अपने अचूक हथियारों से, जो वास्तव में सत्य, प्रेम और अहिंसा का प्रतीक थे, को परिवर्तित करने की मांग की।इस प्रकार, अध्यात्मवाद गांधीवादी विचार का चादर लंगर और तंत्रिका केंद्र है। समाज के आर्थिक संगठन, विकेन्द्रीकरण, ट्रस्टीशिप, राष्ट्रभाषा, मशीनों और उद्योग के रूप में जीवन के भौतिकवादी मामलों के विचार, ईमानदारी और प्रौद्योगिकी उनके गहरे धार्मिक या आध्यात्मिक विश्वास से जीविका प्राप्त करते हैं। जीवन के सांसारिक मामलों को इस तरह नियंत्रित किया जाना चाहिए, मानव जीवन के भौतिक पक्ष को इस तरह से निर्देशित किया जाना चाहिए, शारीरिक आवश्यकताओं को इस तरह से पूरा किया जाना चाहिए कि मनुष्य अपने आध्यात्मिक पक्ष के विकास को सुरक्षित करने में सक्षम हो और इस प्रकार आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सके जो अकेले उसकी है।

सत्याग्रह: गांधीवाद की सर्वोत्कृष्टता

सत्याग्रह गांधीवादी विचारधारा का मूल है। यह राजनीतिक चिंतन और व्यवहार में उनका सबसे मौलिक और अविनाशी योगदान है। सत्याग्रह सत्य का मार्ग है और इसलिए सत्य बल है। भौतिक हथियार विफल हो सकते हैं लेकिन सत्याग्रह का हथियार अचूक है क्योंकि इसके पीछे ब्रह्मांडीय शक्तियां हैं। गांधीजी ने इसे प्रेम का नियम भी कहा। राजनीतिक सत्ता के प्रति अहिंसात्मक प्रतिरोध, बुराई के साथ असहयोग और उपवास इसके आवश्यक अंग हैं, लेकिन वे इसके पूर्ण अर्थ को समाप्त नहीं करते हैं। अच्छाई से बुराई पर विजय पाने का ईसाई सिद्धांत अपने वास्तविक महत्व के करीब आता है। असीमित शक्ति के हथियार के रूप में सत्याग्रह का प्रदर्शन गांधी ने पहले दक्षिण अफ्रीका और फिर भारत में किया। किसी भी संदेह की छाया से परे इसकी प्रभावकारिता की पुष्टि की गई है। इसके द्वारा पराधीन देश अपने विरोधियों का खून की एक बूंद बहाए बिना अपनी आजादी वापस हासिल कर सकते हैं। हिंसक साधनों पर इसकी श्रेष्ठता इस तथ्य में निहित है कि इसके परिणाम के रूप में कोई कड़वाहट या विनाश नहीं छोड़ता है। दूसरी ओर, यह सत्याग्रह के हथियार चलाने वाले और उसके खिलाफ हथियार चलाने वाले के बीच सद्भावना का निशान छोड़ जाता है। बुराई पर अच्छाई की वापसी, प्रेम से घृणा पर काबू पाने का सिद्धांत, जो सत्याग्रह का सार है, एक बहुत पुराना सिद्धांत है। गांधी ने इसे शाश्वत बताया। सुकरात ने इसका अभ्यास तब किया जब उन्होंने सत्य के बारे में प्रचार करना छोड़ने के बजाय हेमलॉक का प्याला पीना पसंद किया। प्रह्लाद ने इसका अभ्यास तब किया जब उसने ईश्वर के प्रति समर्पण

के बजाय अपने पिता द्वारा दी गई सभी यातनाओं को झेला। मीराबाई एक सच्ची सत्याग्रही हो रही थीं और उन्होंने जो कुछ भी गलत समझा, उसे स्वीकार करने के बजाय अपने ऊपर लादे गए सभी अपमानों को सहन करने में एक सच्ची सत्याग्रही थीं। सत्याग्रह का प्रचार और अभ्यास बुद्ध और ईसा मसीह ने भी किया था। यह टॉल्सटॉय, रस्किन और थोरो जैसे आधुनिक विचारकों के लेखन में पाया जाता है जिन्होंने गांधी को बहुत प्रभावित किया। गांधी का योगदान इस तथ्य में निहित है कि जहां पहले इसे निजी जीवन में व्यक्तियों और समूहों द्वारा लागू किया जाता था, वहीं गांधी ने सार्वजनिक मामलों में इसके अनुप्रयोग के क्षेत्र का विस्तार किया। वास्तव में उनकी मौलिकता सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए बहुत बड़े पैमाने पर इसका उपयोग करने में निहित है। एक सत्याग्रही को अपनी लड़ाई में सफल होने के लिए कुछ शर्तों को पूरा करना होगा। चूँकि सत्याग्रह सत्य बल या प्रेम बल या आत्म बल का प्रतीक है, एक सत्याग्रही को स्वयं में सत्य और पवित्रता का विकास करना चाहिए। उसका हृदय एक बालक के समान निर्मल होना चाहिए। उसमें दुर्भावना, घृणा या ईर्ष्या का लेशमात्र भी अंश नहीं होना चाहिए। यह पूर्ण आत्म-निपुणता और आंतरिक अनुशासन है जो एक व्यक्ति को उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ इस सबसे शक्तिशाली हथियार को चलाने का अधिकार देता है। कठोर आत्म-अनुशासन का जीवन अनिवार्य है, केवल वही एक सत्याग्रही को अपील कर सकता है और उत्पीड़क के विवेक को जगा सकता है।

सत्य और अहिंसा

मानव विचार और व्यवहार के लिए गांधी का सबसे बड़ा योगदान सत्य और अहिंसा की उनकी अवधारणा है। जबकि अन्य विचारक या विचारक सामाजिक और आर्थिक अन्याय के उन्मूलन के लिए वर्ग युद्ध और हिंसक क्रांति पर जोर देंगे, गांधी ने सत्य और अहिंसा में अपनी आस्था दोहराई। उन्होंने अपने देशवासियों को विद्रोह का एक नया तरीका सिखाया। वे हिंसा का अहिंसा से, असत्य का सत्य से, घृणा का प्रेम से सामना करेंगे। गांधी के लिए, सत्य और अहिंसा अविभाज्य हैं। वे एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं, बल्कि एक चिकनी बिना मुहर लगी धात्विक डिस्क हैं। सत्य के खोजी को अनिवार्य रूप से अहिंसा के रूप में भी अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करना था।

सत्य (सत्य) और अहिंसा की अवधारणा

मानव विचार और व्यवहार के लिए गांधी के सबसे महान योगदानों में से एक सत्य और अहिंसा की उनकी अवधारणा है। जहां विभिन्न विचारधाराओं वाले लोग सामाजिक और आर्थिक अन्याय के उन्मूलन के लिए वर्ग युद्ध और हिंसक क्रांति पर जोर देंगे, वहीं गांधी ने सत्य और अहिंसा में अपनी आस्था दोहराई। उन्होंने अपने देशवासियों को विद्रोह का एक नया तरीका सिखाया। वे हिंसा का अहिंसा से, असत्य का सत्य से और घृणा का प्रेम से सामना करते थे। गांधी के लिए, सत्य और अहिंसा अविभाज्य हैं। वे एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं, या बल्कि एक चिकनी बिना मुहर लगी धातु की डिस्क हैं। सत्य के साधक को अनिवार्य रूप से अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, भले ही अहिंसा को सत्य के सख्त पालन के बिना महसूस नहीं किया जा सकता। गांधी के अनुसार, सत्य ईश्वर है क्योंकि उसने अपने भीतर सभी जीवन को समाहित कर लिया है। इस प्रकार, सत्य अहिंसा के बिना कायम नहीं रह सकता है जो कि हमारे अस्तित्व का नियम है। हिंसा असत्य है क्योंकि यह जीवन की एकता और पवित्रता के विरुद्ध है। जीवन में अहिंसा का पालन सत्य के साधक का सर्वोच्च कर्तव्य बन जाता है। अहिंसा का अर्थ है किसी को चोट न पहुँचाना। यह विचार, वचन और कर्म में अहिंसा का प्रतीक है, हिंसा तब की जाती है जब कोई किसी के बारे में बुरा सोचता है या कठोर शब्द बोलता है, भले ही किसी को कोई शारीरिक चोट न लगी हो। अहिंसा का पुजारी आत्म-पीड़ा सहन कर सकता है या आत्म-बलिदान के लिए तैयार भी हो सकता है, लेकिन वह पृथ्वी पर किसी भी जीव को कभी चोट नहीं पहुँचाएगा। गांधी का मानना है, "मैं अपने सैनिकों में बिना मारे मरने का साहस पैदा करता हूं"। गतिशील स्थिति में अहिंसा का अर्थ

सचेतन पीड़ा है। इसका अर्थ दुष्ट मृग की इच्छा में प्रवेश नहीं है, बल्कि इसका अर्थ अत्याचारी की इच्छा के विरुद्ध अपनी पूरी आत्मा को लगा देना है। अहिंसा सर्वोच्च क्रम की एक सक्रिय शक्ति है। अहिंसा के साधक की अन्तिम विजय निश्चित है। हमारे अस्तित्व के इस कानून के तहत काम करते हुए, एक व्यक्ति के लिए यह संभव है कि वह अपने सम्मान, अपने धर्म, अपनी आत्मा की सेवा के लिए एक अन्यायपूर्ण साम्राज्य की पूरी ताकत को चुनौती दे और उस साम्राज्य के पतन या उसके उत्थान की नींव रखे। अहिंसा आत्मा बल या हमारे भीतर भगवान की शक्ति है "।

अहिंसा का अभ्यास करने की शर्तें

गांधी कुछ शर्तों या अहिंसा की प्रथाओं को बताते हैं जो इस प्रकार हैं:

1. मनुष्य के भीतर ईश्वर की जीवित उपस्थिति की चेतना
2. पूर्ण विनम्रता
3. हृदय की पवित्रता
4. साहस
5. सहनशीलता
6. निर्भयता
7. शोषण से पूर्णत: विरत रहना
8. गैर कब्ज़ा

व्यक्तिगत स्वतंत्रता

गांधी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बहुत जोर देते हैं। उसके लिए व्यक्ति सर्वोच्च विचार है, वह अधिकार और मूल्य का केंद्र है। यदि व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का अवसर नहीं मिला तो कोई बड़ी प्रगति कभी नहीं की जा सकती। कांट की तरह, गांधी राज्य के नकारात्मक कार्यों में विश्वास करते थे। उनके लिए व्यक्ति साध्य है राज्य साधन है। हेगेल के विपरीत वह व्यक्ति को राज्य की वेदी पर बलिदान नहीं करेगा। वह समाज प्राकृतिक मौत मरने के लिए अभिशप्त है जहां व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पहल पर अंकुश लगाया जाता है। यदि व्यक्ति यह गिनना बंद कर दे कि समाज का जीवन क्या है? केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही मनुष्य को स्वेच्छा से समाज की सेवा के लिए समर्पित कर सकती है। यदि यह उससे छीन लिया जाता है, तो वह एक ऑटोमेटन बन जाता है और समाज बर्बाद हो जाता है। कोई भी समाज संभवतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खंडन पर नहीं बनाया जा सकता है। राज्य का उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायता करना है। गांधी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक दायित्व के बीच कोई संघर्ष नहीं देखते हैं। अहिंसा पर आधारित समाज में व्यक्ति अपने लिए दूसरों के शोषण को छोड़ देगा और अपने जीवन को इस प्रकार नियमित करेगा, आत्म-संयम और आत्म-नियंत्रण का अभ्यास करेगा कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक के बीच संघर्ष के लिए शायद ही कोई अवसर होगा दायित्व। जिन लोगों ने आंतरिक स्वतंत्रता या स्वराज को महसूस किया है, उनके लिए सभी के भले को बढ़ावा देने के लिए निःस्वार्थ भक्ति स्वयं को महसूस करने का सबसे अच्छा साधन है। यह और कुछ नहीं बल्कि व्यक्ति और समाज के बीच उचित संबंध के सामाजिक सामंजस्य के आधार के रूप में धर्म के प्राचीन हिंदू आदर्श का पुनरुद्धार है। सामाजिक दायित्व की आवश्यकताओं के लिए दोहरी स्वतंत्रता के दावों का समाधान करके गांधी ने सामाजिक और राजनीतिक दायित्व की शाश्वत समस्या को हल किया और इस तरह सामाजिक और राजनीतिक विचारों में एक महान योगदान दिया।

अधिकारों और कर्तव्यों की गांधीवादी अवधारणा

एम.के. गांधी के अनुसार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक दायित्व के बीच संघर्ष वर्तमान समाज में व्यक्ति के अधिकारों पर अनुचित जोर देने के कारण उत्पन्न होता है। गांधी अधिकारों से अधिक कर्तव्यों को महत्व देते थे। उनका कहना है कि अधिकार अवसर हैं या दूसरों की सेवाओं के माध्यम से आत्म-अनुभूति और उनके द्वारा अपना कर्तव्य करना। अपने कर्तव्यों को निभाने का अधिकार ही एकमात्र ऐसा अधिकार है जिसके लिए जीने या मरने का अधिकार है। इसमें सभी वैध अधिकार शामिल हैं। अधिकारों और कर्तव्यों पर गांधी के विचार स्वराज पर उनके विचारों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। लोगों के स्वराज का अर्थ है स्वराज (व्यक्तियों का स्वशासन) का कुल योग। इस तरह का स्वराज व्यक्तियों द्वारा नागरिकों के रूप में अपने कर्तव्यों के प्रदर्शन से ही आता है। इसमें कोई भी व्यक्ति अपने अधिकारों के बारे में नहीं सोचता। वे तब आते हैं, जब उनकी आवश्यकता होती है, कर्तव्य का बेहतर प्रदर्शन यह उनके तरीके से था कि गांधीजी ने एक व्यक्ति और समाज के दावों के बीच संघर्ष को हल करने की कोशिश की और व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक संयम की शाश्वत समस्या को हल किया।

विकेंद्रीकरण पर विचार

गांधी ने राजनीतिक और साथ ही आर्थिक विकेंद्रीकरण दोनों की वकालत की। जैसा कि गांधी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के समर्थक थे, केंद्रीकरण व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ असंगत है। यदि एक अहिंसक समाज का निर्माण करना है, तो केंद्रीकरण को बिना पर्याप्त बल के बनाए रखा और बचाव नहीं किया जा सकता है। केंद्रीकरण जीवन को अत्यधिक जटिल बना देता है और व्यक्तिगत पहल को प्रतिबंधित करता है और स्वशासन के अवसरों को कम करता है। यह प्रतिरूपण की ओर भी ले जाता है और एक व्यक्ति को नैतिक विचारों के प्रति असंवेदनशील बनाता है। गांधी राजनीतिक और आर्थिक दोनों क्षेत्रों में समाज की विकेंद्रीकृत व्यवस्था के पक्षधर हैं। गांधी का मानना है कि सत्य और अहिंसा की प्राप्ति और प्यार और सहानुभूति और करुणा को व्यक्तिगत कार्यों के नियामक कारक बनाना एक केंद्रीकृत व्यवस्था में असंभव है। विकेंद्रीकृत व्यवस्था से ही व्यक्ति का नैतिक विकास संभव है। राजनीतिक विकेंद्रीकरण का अर्थ है कि ग्राम समुदायों को अपने स्वयं के मामलों के प्रबंधन में स्वायत्तता का सबसे बड़ा उपाय दिया जाना चाहिए। ग्राम पंचायतों को जीवन के सभी पहलुओं में गांव के विकास के कार्य सौंपे जाने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति में समाज के मामलों के शासन में भागीदारी की भावना होनी चाहिए। आर्थिक विकेन्द्रीकरण का अर्थ है कुटीर उद्योगों द्वारा केंद्रीकृत बड़े पैमाने के उद्योगों का प्रतिस्थापन। एक अहिंसक समाज में यह एक बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि आज की दुनिया में हिंसा का एक बड़ा हिस्सा एक अत्यधिक औद्योगिक व्यवस्था के अस्तित्व के कारण है। केंद्रीकृत औद्योगीकरण न केवल समाज को अमीरों और नोटों में विभाजित करता है, बल्कि लोगों को दूसरों के दुख और पीड़ा के प्रति असंवेदनशील भी बनाता है। जिस समाज में केवल धन का संचय ही सब कुछ है और जीवन का अंत है, उस समाज में वास्तविक सुख की कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती। जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए उद्योगवाद की चिमनियों से निकलने वाले लालच और लोभ से प्रदूषित जलवायु में अनुकूल मिट्टी नहीं मिलती है। मनुष्य का नैतिक और आध्यात्मिक विकास और जीवन के उच्च मूल्यों की खोज कुटीर उद्योगों की एक प्रणाली में ही संभव है जिसमें श्रमिक उत्पादन के उपकरणों और वस्तुओं के निर्माण के स्वामी होते हैं। बड़े पैमाने के उद्योगों के लिए कुटीर उद्योगों का प्रतिस्थापन मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त करने और आर्थिक क्षेत्र में सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को पेश करने की नई विधि है। गांधी को विश्वास था कि मानव जाति का नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास विकेंद्रीकृत व्यवस्था में ही संभव है। यदि वर्तमान प्रकार का बड़े पैमाने का उद्योगवाद बेरोकटोक चला जाता है तो मानवता को युद्ध के परिणामस्वरूप विनाश का सामना करना पड़ेगा।

निष्कर्ष

लोग आज भी गांधी और उनके व्यक्तित्व को याद करते हैं और संजोते हैं जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और अन्य क्षेत्रों में भी अविश्वसनीय योगदान दिया। इसके अलावा, महात्मा गांधी को उनकी शिक्षाओं के लिए याद किया जाता है। उनके विचार आज भी लोगों के जेहन में गूंजते हैं। महात्मा गांधी को भारत का सबसे शानदार राजनेता माना जाता है। गांधीवाद की प्रासंगिकता को इस तथ्य से महसूस किया जा सकता है कि उनके विचार और विचार अभी भी भारतीय राष्ट्र की नीतियों और शासन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और हमारे समाज को परेशान करने वाली कई समस्याओं को हल करने के सबसे मानवीय तरीके को रेखांकित करते हैं। अहिंसा और सत्य, स्वदेशी और स्वराज के उनके विचारों ने भारत को औपनिवेशिक शासन से मुक्त करने में मदद की। गांधी के विचार समाज के लिए प्रेरणा थे। महान महात्मा के सभी विचार और विचार सत्य के साथ आजीवन प्रयोग के माध्यम से उनके पास पहुंचे, जो वर्तमान युग में गांधीवादी विचारों को और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है। समकालीन जीवन की बुराइयों और बुराइयों से मानव जाति की मुक्ति गांधी द्वारा प्रचारित कुछ प्रमुख सिद्धांतों पर निर्भर करती है। गांधी और उनके दर्शन हमेशा हम जितना जानते हैं उससे कहीं अधिक हैं। उनके राजनीतिक योगदान ने हमें स्वतंत्रता प्रदान की, लेकिन उनके दर्शन और सिद्धांत हमारे जीवन को आलोकित करते हैं। शायद यह रवींद्रनाथ टैगोर को स्पष्ट था और इसीलिए उन्होंने गांधी को महात्मा यानी महान आत्मा का नाम दिया।

संदर्भ

1. महात्मा गांधी, हिज लाइफ एंड टाइम्स, लुइस फिशर, भारतीय विद्या भवन, 2013।
2. गांधीवाद में अध्ययन, निर्मल कुमार बोस, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।
3. वी.पी. वर्मा, द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी एंड सरवोदय, (पटना, भारती भवन, 2012)
4. वी.पी. वर्मा, महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन और सरोवोदय
5. ईश्वरन, एकनाथ। गांधी, द मैन: द स्टोरी ऑफ हिज ट्रांसफॉर्मेशन। नीलगिरी प्रेस, 2012
6. गुम्मदी वीरराजू, गांधीयन फिलॉसफी: इट्स रेलीवेंस टुडे, डिसेंट बुक्स, नई दिल्ली, 2011।
7. सवानंद एस पाठक, गांधीवादी विचार, सीबीएस प्रकाशक, नई दिल्ली, 2015
8. करण सिंह, द एसेंस ऑफ गांधीयन फिलॉसफी, ज्ञान बुक प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली, 2014।
9. एम. महाराजन, फंडामेंटल्स ऑफ गांधीयन थॉट्स, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2010।
10. राम बिनोद सिंह, विकास योजना के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण, संकल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010।
11. मोनिका स्पोलिया, गांधीयन अप्रोच टू पीस, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2016।
12. रवींद्र कुमार, गांधीवादी विचार: नई दुनिया नए आयाम, कल्पाज़ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015।
13. रवींद्र कुमार, गांधीवादी विचार: एक अवलोकन, ज्ञान प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, 2016
14. जे.एस. माथुर, समकालीन समाज: गांधीवादी मूल्यांकन, ज्ञान प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, 2010
15. एम. चक्रवर्ती, गांधीवादी धर्म, ज्ञान प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, 2011